अपराध
प्रेम और क्षमा

शिष्य थॉमसन

''ये जनाः यीशुम्, आश्रित्य तेऽधुना दण्डार्हा न भवन्ति''
अब उन पर जो मसीह यीशु में हैं, दंड की आज्ञा नहीं (रामियों 8:1)

1

आनंद की आँखें जज साहब पर टिकी हुई थीं। पलक नहीं झपकती थी, कोर्ट के कटघरे में खड़े हुए पाँव काँपते थे, शरीर शक्तिहीन होता हुआ। कमरे के एक कोने पर एक छोटा दु:खी परिवार मौन मुद्रा में, आनंद की वृद्ध माँ, पत्नी और तीन बच्चे।

जज साहब की आँखें आनंद की तरफ उठीं, कुछ क्षण खामोश भावहीन अवस्था, और फिर सुनाया फैसला–''पाँच वर्ष पूर्व ग्राम राजपुर में हुए कत्ल के जुर्म में ''सज़ा ए मौत।''

आनंद की चीख निकली। रोते, बिलखते, चिल्लाते हुए हाथ जोड़कर उसने दया की याचना की, ''जज साहब मुझे माफ़ कर दो, माफ़ कर दो, मुझसे गलती हो गई। पता नहीं यह सब क्या और कैसे हो गया। मुझ पर रहम करो। मैं बदल गया हूँ। मेरे बीबी-बच्चे भूखे मर जायेंगे, मुझे बचा लो, मुझे बचा लो। बस आनंद की पुकारें कोर्ट के कमरे में गूँजती रह गईं।

फिर भी जज साहब खामोश क्यों? कोई भाव नहीं? कोई जवाब नहीं।

आप से सवालः क्या दया करने का अधिकार उनके पास नहीं था?

आपका क्या विचार है?

2

चलिये एक और सच्ची घटना, इतिहास में थोड़ी पुरानी पर हमारे अंत:करण को झकझोरने वाली।

प्रभु यीशु एक बार अपने शिष्यों के साथ यहूदियों के बड़े मंदिर के दालान में बातें कर रहे थे। ईश्वरीय जीवन, प्रेम और सत्य की चर्चा वे कर रहे थे। अचानक धार्मिक गुरु और उनके धार्मिक अनुयाइयों की भीड़ एक स्त्री को धकेलते और खींचते हुए लाती है,

और वे उसे प्रभु यीशु के सामने खड़ा कर देते हैं। फटेहाल, भयभीत, और लज्जा से परिपूर्ण स्त्री सिर झुकाये उसके सामने खड़ी है।

प्रभु यीशु खामोश हो उसके सामने जमीन पर बैठ जाते हैं। धर्माधिकारी आरोप लगाते हैं। और कहते हैं, ये स्त्री पापिन है, और सेक्स के अनैतिक कर्म में पकड़ी गई है। हमारे धर्मग्रन्थ के कानून के अनुसार इसे पत्थरों से मारकर मृत्युदंड दिया जाना चाहिये। आपका क्या विचार है? एक हाथ में धर्मग्रन्थ और दूसरे हाथ में पत्थर? क्रोध और घृणा से भरी आँखें, उस स्त्री के बदन को चीरती हुई।

प्रभु यीशु को अचानक जज के स्थान पर बैठा दिया गया है। वे कहते हैं, ठीक है, जो तुम में निष्पाप हो वह पहला पत्थर मारे। इस पर भीड़ के मृत विवेक जागृत हुए और बड़े से लेकर छोटे तक हर व्यक्ति अपना पत्थर वहाँ छोड़कर चले गये।

प्रभु यीशु खड़े हुए और उस स्त्री पर दया दृष्टि करके बोले, ''मैं भी तुम पर दंड की आज्ञा नहीं देता, जाओ फिर पाप मत करना।'' गलियों में ''मैं बच गई हूँ'' चिल्लाती हुई, वह स्त्री अपने बिछड़े परिवार से जा मिली।

आप से सवाल : क्या प्रेम के पास क्षमा करने का अधिकार है?

क्या सोचते हैं आप?

3

चलिए एक और सच्ची घटना, थोड़ी और पुरानी एक दूर देश में 'एक व्यक्ति जिसका नाम होशे था, वो ईश्वर का भक्त था, और एक नबी था। प्रेम का उदाहरण समझाने के लिये, उसे ईश्वरीय मार्गदर्शन हुआ, कि एक वेश्या से विवाह कर ले। उसने वेश्या को धन देकर विवाह किया, और उससे अच्छे चालचलन का वादा लिया। कुछ वर्ष बीत गये, इनके परिवार में बाल-बच्चे आये, और तब एक दिन शाम उसकी पत्नी घर नहीं लौटी, और तब कई वर्ष होशे के दु:ख में बीते। एक दिन बाज़ार में होशे ने अपनी पत्नी को लुटी हुई, कमज़ोर और लाचार हालत में बिकते देखा। वह दौड़ा और अपना सब धन देकर उसे दोबारा खरीद कर घर वापस ले आया।

आप से सवाल : क्या प्रेम अन्याय सहते हुए भी दया कर सकता है?

क्या सोचते हैं आप?

4

चलिये एक और सत्य कथा, एक पुरानी घटना जब गुलाम खरीदे और बेचे जाते थे। यीशु सेवक पौलुस अक्सर फिलमोन के घर प्रवचन किया करते थे। फिलमोन धनी था, पर यीशु भक्त था। कुछ वर्ष पश्चात् जब पौलुस रोम में यीशु मत के कारण जेल में था अचानक एक दिन ओनेसिमस जो फिलमोन का गुलाम था, उसके घर में चोरी करके रोम पहुँच जाता है। उसकी भेंट वहाँ पौलुस से होती है, और यीशु की दीक्षा ग्रहण कर 'ओनेसिमस का जीवन नया हो जाता है। तब पौलुस उसे वापस फिलमोन के पास भेजता है। और उसके साथ एक पत्र भी, जिसमें वह कहता है। भाई फिलमोन अब ओनेसिमस तुम्हारा गुलाम नहीं पर भाई है। इसने जो भी तुम्हारा नुकसान किया है उसे मेरे खाते में डाल दो, मैं उसे चुका दूँगा।

आप से सवाल : क्या प्रेम दूसरों का कर्ज अपने ऊपर उठा सकता है? क्या सोचते हैं आप?

5

एक और सत्यकथा जिसने संसार में हलचल पैदा कर दी और अपने अनुयाइओं के जीवन बदल दिये।

कुछ शताब्दियों पूर्व ईशपुत्र प्रभु यीशु मानव रूप धारण कर जगत में आते हैं। स्वर्गलोक से परमेश्वर के सत्य को लाते हैं और मोक्षमार्ग बनकर मनुष्यों के बीच आते हैं।

उन्होंने बहुतेरे चमत्कार किए और मानव सेवा में जीवन लगाया। अंधों की आँखें खोलीं, कोड़ियों को शुद्ध किया, बीमारों को स्वस्थ किया। और जो लूले, लंगड़े, बहरे और गूँगे उनके पास आये। उन्होंने सबको नया जीवन दिया। मात्र पाँच रोटी से उन्होंने पाँच हज़ार से अधिक भूखों को खिलाया। प्रभु यीशु ने आँधी और तूफान को अपने वचन की सामर्थ से शाँत किया, और समुंदर की लहरों को थमा दिया। भूत प्रेतों से पीड़ितों को आजाद किया। सेवा और प्रेम को दिखते हुए उन्होंने अपने शिष्यों के पाँव धोए, और उन्हें सेवा करने का आदेश दिया।

धर्मगुरुओं और सरकार ने उनके हाथों और पाँवों पर कीलें ठोकीं, सिर पर काँटों का ताज रखा और बदन पर कोड़े मारकर क्रूस पर चढ़ाकर उसे मृत्युदंड दिया।

क्रूस पर दर्द, अपमान और निंदा सहते हुए भी वे प्रार्थना करते हैं, ''हे पिता इन्हें क्षमा कर क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं''।

आप से सवालः क्या ऐसा प्रेम है जो दुश्मन को क्षमा करे, और उन्हें बचाने के लिये अपने प्राण दे?

क्या सोचते हैं आप?

सच तो ये है कि प्रभु यीशु में न्याय, दंड, प्रेम और क्षमा एक स्थान पर मिल गये हैं। और इसके फलस्वरूप मनुष्य के पास 'मोक्ष उपाय' आया है।

पाप की मज़दूरी मृत्यु है। ये स्वर्ग में विराजमान जज परमेश्वर का फैसला है। लेकिन परमेश्वर के प्रेम के कारण प्रभु यीशु जो स्वयं ईश्वर थे, हम सबके पापों के लिये मृत्युदंड उठाते हैं। जो एक महान् प्रेम प्रदर्शन है। प्रभु यीशु ने कहा, ''मैं कंगालों के लिये शुभ संदेश, बंधुओं के लिये छुटकारा, अंधों को दृष्टिदान और कुचले हुओं का उत्थान लाया हूँ।''

परमेश्वर ने अपने पुत्र प्रभु यीशु को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दंड की आज्ञा दे, परन्तु इस कारण कि जगत उसके द्वारा मुक्ति पाये (यूहन्ना बाइबल 3:17)।

प्रभु यीशु कहते हैं, मैं इसलिये आया कि वे जीवन पायें।

धर्मगुरुओं ने तुम से कहा था, हत्या नहीं करना, पर मैं कहता हूँ तुम अपने मन में क्रोध भी नहीं करना।

तुम्हें सिखाया गया था कि आँख के बदले आँख, और दाँत के बदले दाँत परन्तु मैं कहता हूँ कि बुरे का सामना बुराई से नहीं करना, परन्तु जो कोई तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़ मारे, उसकी ओर दूसरा भी फेर देना।

तुम्हें सिखाया गया था, कि अपने पड़ोसी से प्रेम रखना पर अपने शत्रुओं से बैर, पर मैं तुम से कहता हूँ, अपने शत्रुओं से प्रेम रखो। और अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करो।

यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारे स्वर्गीय पिता परमेश्वर भी तुम्हारे पाप क्षमा करेंगे।

क्या आप पापों की क्षमा चाहते है क्या मुक्ति चाहते है। क्या ईश्वर से आत्मा का मिलन चाहते है ? तो आइये प्रार्थना करें।

मोक्ष प्रार्थना : हे प्रभु यीशु, मेरे पाप का मृत्युदंड आपने उठाया, मेरा न्याय किया, क्रूस पर आपने पवित्र खून बहाया मैं आप पर पूरा भरोसा रखता हूँ, मेरे पाप क्षमा करो, अपनी पवित्र आत्मा दो, मुझे नया जीवन दो। आमीन।

Please visit: for new messages and Bhakti songs
www.shishyashram.com

SHISHYASHRAM
[Registered under Indian Trust Act, 1882 Reg.no-2401]
305 D/A Sheeshmahal, Shalimar Bagh, New Delhi-88,
e-mail:jawabjawab@yahoo.com